SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अशोक की धम्म नीति की समकालीन प्रासंगिकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

जय नन्द ज्योति भास्कर, शोधार्थी, इतिहास विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
जय नन्द ज्योति भास्कर, शोधार्थी
E-mail : jaynandjyoti@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/03/2025
Revised on : 08/05/2025
Accepted on : 17/05/2025
Overall Similarity : 04% on 09/05/2025

शोध सार

यह शोध–पत्र सम्राट अशोक की धम्म नीति का एक समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसका उद्देश्य इस प्राचीन नैतिक दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। अशोक द्वारा कलिंग युद्ध के पश्चात अंगीकार की गई धम्म नीति, जिसमें अहिंसा, करुणा, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समानता, और पर्यावरणीय संरक्षण जैसे सिद्धांत सम्मिलित थे, न केवल तत्कालीन समाज में नैतिक अनुशासन स्थापित करने का प्रयास थी, बल्कि यह आज के वैश्विक सामाजिक, राजनीतिक और पारिस्थितिक संकटों के संदर्भ में भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। शोध में ऐतिहासिक स्रोतों विशेषकर अशोक के शिलालेखों, स्तंभ लेखों और समकालीन बौद्ध साहित्य का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाया गया है कि धम्म नीति एक सार्वभौमिक नैतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। आधुनिक समाज में जातीय, धार्मिक और लैंगिक भेदभाव, जलवायु परिवर्तन, तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर धम्म के सिद्धांत प्रभावी समाधान प्रदान करते हैं। अध्ययन तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए गांधीवादी अहिंसा और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के साथ धम्म नीति की साम्यता को रेखांकित करता है, तथा रोमन और चीनी प्राचीन शासकों की नीतियों से इसकी तुलना करता है। शोध यह भी स्वीकार करता है कि आधुनिक राजनीतिक संरचनाओं में धम्म नीति को पूर्णतः लागू करना एक चुनौती है, परंतु नैतिक शिक्षा, नीति निर्माण और जनजागरूकता के माध्यम से इसके तत्वों को पुनर्जीवित किया जा सकता है। अंततः यह शोध–पत्र धम्म नीति को एक ऐसे नैतिक मार्गदर्शन के रूप में प्रस्तुत करता है जो आज के समाज को अधिक न्यायपूर्ण, सहिष्णु और टिकाऊ बना सकता है।

मुख्य शब्द

अशोक, धम्मनीति, अहिंसा, न्याय, शिलालेख, इतिहास.

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक का नाम एक ऐसे शासक के रूप में लिया जाता है, जिसने न केवल एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, बल्कि शासन को नैतिकता, करुणा और धर्म आधारित सिद्धांतों पर टिकाया। मौर्य वंश के इस महान शासक ने कलिंग युद्ध के बाद हृदय परिवर्तन का अनुभव किया और हिंसा को त्यागकर धम्म (धर्म) की ओर अग्रसर हुए। अशोक की धम्म नीति केवल एक धार्मिक अवधारणा न होकर एक सामाजिक–सांस्कृतिक दर्शन थी, जिसका उद्देश्य जनकल्याण, नैतिक आचरण, सहिष्णुता और मानवता की स्थापना करना था। इस नीति की झलक उनके शिलालेखों, स्तंभ लेखों और शासकीय आदेशों में स्पष्ट रूप से मिलती है, जो आज भी भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में पाए जाते हैं।अशोक की धम्म नीति का ऐतिहासिक महत्व इस बात में निहित है कि उन्होंने शासन को धर्मोपदेश का माध्यम बनाया और एक ऐसी नीति को जन्म दिया, जिसमें हिंसा, असहिष्णुता और दमन का स्थान शांति, सहअस्तित्व और नैतिकता ने लिया। अशोक के अनुसार धम्म का अर्थ किसी विशेष धर्म या संप्रदाय का प्रचार नहीं था, बल्कि यह व्यवहारिक नैतिकता, सभी प्राणियों के प्रति करुणा, वृद्धों का सम्मान, माता–पिता की सेवा, और सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता जैसी सार्वभौमिक मान्यताओं का समावेश था। यह नीति न केवल तत्कालीन समाज को एक नैतिक दिशा प्रदान करती थी, बल्कि शासन को मानवीय दृष्टिकोण से देखने की एक नई परंपरा की शुरुआत भी थी।

अशोक के शिलालेखों और स्तंभ लेखों में वर्णित धम्म नीति का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि यह नीति समाज में नैतिक अनुशासन और आत्मसंयम को प्रोत्साहित करती थी। प्रमुख शिलालेखों जैसेः महाबोधि, रूपनाथ, धौली और गिरनार शिलालेखों में अशोक ने आत्मनिरीक्षण, धार्मिक सहिष्णुता, जीव हिंसा का परित्याग, और प्रशासनिक नैतिकता पर बल दिया है। उनके अनुसार एक सच्चा शासक वह है जो प्रजा के कल्याण के लिए कार्य करे और दया, क्षमा तथा विनम्रता जैसे गुणों को अपनाए।

शोध उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य अशोक की धम्म नीति की समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। आज के सामाजिक, राजनीतिक, और पर्यावरणीय संकटों के दौर में यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम अपने ऐतिहासिक धरोहरों की पुर्नव्याख्या करें और यह समझें कि क्या अशोक की धम्म नीति जैसे सिद्धांत आज के युग में भी समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं।

शोध प्रश्न

इस शोध में प्रमुख शोध प्रश्न यह होगा कि "धम्म नीति के सिद्धांत आज के सामाजिक, राजनीतिक, और पर्यावरणीय संदर्भ में कितने प्रासंगिक हैं?"

शोध प्रविधि

इस प्रश्न के उत्तर हेतु शोध की विधि के रूप में ऐतिहासिक विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन, और समकालीन संदर्भों का मूल्यांकन अपनाया जाएगा। इससे यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि क्या अशोक की धम्म नीति केवल अतीत की विरासत है या आज के विश्व में नैतिक पुर्नजागरण की आधारशिला बन सकती है।

साहित्य समीक्षा

रोमिला थापर ने Ashoka and the Decline of the Mauryas में अशोक के शासन, व्यक्तित्व, और धम्म नीति की गहन व्याख्या प्रस्तुत करती है। वे मानती हैं कि अशोक की धम्म नीति एक राजनीतिक नैतिकता थी, जो राज्य

की शक्ति को नैतिकता से जोड़ती थी। थापर यह भी कहती हैं कि यह नीति धार्मिक प्रचार न होकर समाज सुधार का माध्यम थी। उनका विश्लेषण ऐतिहासिक साक्ष्यों और शिलालेखों पर आधारित है, जो शोध को एक प्रामाणिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

ए.एल.बाशम The Wonder That Was India में मौर्यकालीन भारत की सांस्कृतिक उन्नति में अशोक की धम्म नीति को एक निर्णायक मोड़ माना। वे इस नीति को भारतीय इतिहास में पहली संगठित नैतिक नीति बताते हैं, जो राज्य संचालन और जनकल्याण को जोड़ती है। हालांकि बाशम इसे अधिक आदर्शवादी दृष्टिकोण मानते हैं और इसके राजनीतिक प्रभाव की सीमाओं को भी रेखांकित करते हैं।

हान्स फॉक की पुस्तक में Ashokan Inscriptions and the Study of Dhammadk अध्ययन विशेष रूप से अशोक के शिलालेखों पर केंद्रित है। वे शिलालेखों की भाषा, शैली और भावार्थ के आधार पर यह सिद्ध करते हैं कि धम्म नीति एक समावेशी और धर्मनिरपेक्ष नीति थी। उनका शोध धम्म को बौद्ध धर्म से पृथक मानकर उसकी सार्वभौमिकता को रेखांकित करता है।

चक्रवर्ती की कृति Dhamma and the Political Ethic of Ashoka में अशोक की धम्म नीति को एक "राजनीतिक नैतिकता" के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो सत्ता और करुणा के समन्वय का प्रयास था। वे यह तर्क देते हैं कि अशोक की नीति उस युग के धार्मिक तनावों का उत्तर थी। उनकी विश्लेषणात्मक शैली आधुनिक राजनीतिक नैतिकता के साथ तुलना कर समकालीन प्रासंगिकता को उजागर करती है।

पीयूष शर्मा, धम्म नीति और समकालीन भारत, समकालीन विमर्श, (2020) यह लेख आधुनिक भारत के सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में धम्म नीति की व्याख्या करता है। शर्मा का कहना है कि अशोक की नीतियाँ आज भी सामाजिक समावेशिता, पर्यावरण संरक्षण और धार्मिक सहिष्णुता के लिए प्रेरणा स्रोत हो सकती हैं। वे शिक्षा और नीति निर्माण में धम्म सिद्धांतों के पुर्नस्थापना की आवश्यकता पर बल देते हैं।

मौर्य साम्राज्य और सम्राट अशोक का परिचय

मौर्य साम्राज्य भारतीय उपमहाद्वीप का पहला विशाल और संगठित साम्राज्य था, जिसकी स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने 322 ई.पू. में चाणक्य की सहायता से की थी। यह साम्राज्य अपने चरम पर लगभग सम्पूर्ण भारत, आधुनिक पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश तक फैला हुआ था। चंद्रगुप्त, बिंदुसार और फिर सम्राट अशोक इसके प्रमुख शासक रहे। अशोक (268 ई.पू. से 232 ई.पू.) मौर्य वंश का तीसरा और सबसे प्रसिद्ध शासक था। प्रारंभिक जीवन में अशोक एक पराक्रमी, लेकिन कठोर हृदय शासक माने जाते थे। वे एक योग्य योद्धा और कुशल प्रशासक थे, जिन्होंने अपने राज्य विस्तार की नीति के तहत कई युद्ध किए।

अशोक का हृदय परिवर्तन

कलिंग युद्ध और बौद्ध धर्म की स्वीकृति– अशोक के जीवन का निर्णायक मोड़ कलिंग युद्ध (लगभग 261 ई. पू.) था। कलिंग, वर्तमान उड़ीसा क्षेत्र में स्थित एक स्वतंत्र और समृद्ध राज्य था। अशोक ने जब कलिंग पर आक्रमण किया, तो युद्ध अत्यंत भीषण सिद्ध हुआ। ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार इस युद्ध में लगभग एक लाख लोगों की मृत्यु हुई, और हजारों को बंदी बनाया गया। युद्ध की विभीषिका और जनसंहार को देखकर अशोक की अंतरात्मा जागृत हुई। उन्होंने आत्मचिंतन किया और हिंसा के मार्ग को त्याग दिया। इस मानसिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप अशोक ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया। उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं से ज्ञान प्राप्त किया और जीवन के उद्देश्य को जनकल्याण तथा नैतिक मूल्यों के प्रचार–प्रसार में रूपांतरित कर दिया। इस प्रकार एक साम्राज्यवादी शासक से नैतिक और करुणाशील सम्राट का उदय हुआ, जो भारतीय इतिहास में अद्वितीय है।

धम्म नीति के मूल सिद्धांतरू अशोक ने जो नीति अपनाई, वह 'धम्म'' (पालि शब्द, संस्कृत में 'धर्म') कहलायी, जो किसी एक संप्रदाय से न जुड़कर सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों पर आधारित थी। इसका उद्देश्य थाः सभी जातियों, धर्मों और वर्गों के बीच सामंजस्य और करुणा का विकास।

धम्म नीति के मुख्य सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

1. **अहिंसा:** सभी प्राणियों के प्रति करुणा और हिंसा का परित्याग धम्म का मूल तत्व था। पशु बलि का विरोध, युद्ध न करना, और दया का प्रसार इसका हिस्सा था।
2. **सत्य:** सत्य बोलना और आचरण में ईमानदारी रखना अशोक की नैतिक शिक्षाओं का केंद्र था।
3. **करुणा:** सभी जीवों के प्रति सहानुभूति और सेवा भाव को उन्होंने सर्वोच्च मान्यता दी।
4. **धार्मिक सहिष्णुता:** अशोक ने सभी मतों के प्रति सम्मान का भाव व्यक्त किया और किसी एक धर्म की श्रेष्ठता का प्रचार नहीं किया।
5. **सामाजिक कल्याण:** अशोक ने जनकल्याण को सर्वोपरि रखा, अस्पतालों, सड़कों, जलस्रोतों, धर्मशालाओं और वृक्षारोपण जैसी योजनाओं के माध्यम से।

धम्म नीति का कार्यान्वयन

अशोक ने धम्म नीति के प्रचार और क्रियान्वयन के लिए अनेक उपाय किए। इनमें सबसे प्रभावशाली थे शिलालेख और स्तंभ लेख। इन अभिलेखों को ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाइक और ग्रीक लिपियों में संपूर्ण साम्राज्य में स्थापित किया गया ताकि आमजन तक उनकी धम्म की शिक्षाएँ पहुँच सकें। उन्होंने ''धम्म महामात्र'' नामक एक विशेष अधिकारी वर्ग की नियुक्ति की, जिनका कार्य था नैतिक शिक्षा का प्रचार, जन संवाद, धार्मिक सहिष्णुता को प्रोत्साहन और सामाजिक समस्याओं इत्यादि का समाधान करना। इसके अतिरिक्त अशोक ने कई सामाजिक सुधार किए जैसे पशु बलि पर नियंत्रण, महिला कल्याण, जेल सुधार, तथा कृषि और जल प्रबंधन को बढ़ावा देना। उन्होंने सीमावर्ती राज्यों और पड़ोसी देशों के साथ शांतिपूर्ण संबंध बनाए और बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु दूतों को श्रीलंका, म्यांमार, मिस्र, ग्रीस आदि देशों में भेजा।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अशोक की धम्म नीति न केवल एक ऐतिहासिक घटना थी, बल्कि नैतिक शासन का उदाहरण बन गई। यह नीति उस युग में समाज को नैतिक दिशा देने वाली रही, जिसमें युद्ध, वर्चस्व और संकीर्णता प्रचलित थी। आज जब वैश्विक समाज असहिष्णुता, हिंसा और पर्यावरण संकट से जूझ रहा है, तब अशोक की यह नीति एक संभावित वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करती है।

धम्म नीति के प्रमुख सिद्धांतः एक विश्लेषण

सम्राट अशोक की धम्म नीति भारतीय इतिहास की एक अनूठी सामाजिक–नैतिक अवधारणा है, जिसने शासन को नैतिकता के पथ पर चलने की दिशा दी। यह नीति किसी एक धार्मिक मत या संप्रदाय का प्रचार नहीं करती थी, बल्कि यह सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों और व्यवहारिक नैतिकता पर आधारित थी। अशोक ने अपने अनुभवों और आत्मबोध से प्रेरित होकर एक ऐसी नीति को जन्म दिया, जो आज भी सामाजिक समरसता और नैतिक शासन की मिसाल मानी जाती है। धम्म नीति के प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

अहिंसा, युद्ध और हिंसा का परित्याग

अहिंसा, अशोक की धम्म नीति का केंद्रीय स्तंभ था। कलिंग युद्ध की विभीषिका ने अशोक को यह बोध कराया कि कोई भी विजय मानवीय जीवन की क्षति और पीड़ा से अधिक मूल्यवान नहीं हो सकती। इसके बाद उन्होंने युद्ध नीति का परित्याग किया और 'धम्म विजय' को श्रेष्ठ माना। शिलालेखों में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सच्चा विजेता वह है जो जनमानस के हृदय में स्थान बनाए, न कि तलवार के बल पर शासन करे। उन्होंने पशु हिंसा को भी रोका। अशोक के अभिलेखों में उल्लेख है कि उन्होंने शाही रसोई में पशु वध की संख्या घटाई और कई अवसरों पर उसे पूर्णतः निषिद्ध किया। उनका मानना था कि सभी प्राणी समान रूप से पीड़ा का अनुभव करते हैं और सभी के प्रति करुणा का भाव होना चाहिए।

धार्मिक सहिष्णुता

विभिन्न धर्मों के प्रति सम्मान, धम्म नीति का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष धार्मिक सहिष्णुता था। अशोक ने विभिन्न धर्मों बौद्ध, जैन, आजीवक, ब्राह्मणवादी परंपराओं और अन्य आस्थाओं के प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखा। उनके बारहवें शिलालेख में यह विशेष रूप से उल्लिखित है कि सभी पंथों को सम्मान मिलना चाहिए और किसी धर्म को नीचा दिखाना या उसकी निंदा करना उचित नहीं है। धार्मिक सहिष्णुता का यह दृष्टिकोण उस समय अत्यंत प्रगतिशील था, जब सामाजिक संघर्ष प्रायः धार्मिक पहचान के आधार पर होते थे। अशोक का मानना था कि सभी धर्मों में नैतिकता का मूल तत्व विद्यमान होता है, अतः उन सबका आदर किया जाना चाहिए। यह भावना समकालीन समय में बहुलतावादी समाज की आवश्यकता को संबोधित करती है।

सामाजिक समानता

जाति और वर्ग भेदभाव का विरोध, अशोक की धम्म नीति सामाजिक समरसता और समानता पर बल देती थी। यद्यपि तत्कालीन समाज जाति व्यवस्था से बंधा हुआ था, फिर भी अशोक ने अपने अभिलेखों में सभी वर्गों के लिए समान नैतिक शिक्षाएँ दीं। उन्होंने किसी विशेष वर्ग या वर्ण को वरीयता नहीं दी, बल्कि सबके कल्याण की कामना की। धम्म महामात्रों की नियुक्ति समाज के सभी वर्गों तक नैतिक शिक्षाओं को पहुँचाने हेतु की गई थी, न कि केवल उच्च वर्णों तक सीमित रखने के लिए। अशोक ने दासों, स्त्रियों, वृद्धों और निर्धनों के कल्याण के लिए योजनाएँ बनाईं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनकी दृष्टि समावेशी और सामाजिक न्याय पर आधारित थी।

पर्यावरण संरक्षण

पशु–पक्षियों और वनस्पतियों की रक्षाय अशोक का पर्यावरणीय दृष्टिकोण भी उनके धम्म नीति का एक अभिन्न अंग था। उन्होंने न केवल जीवहत्या को हतोत्साहित किया, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने हेतु वृक्षारोपण, जलाशयों की स्थापना और पशु चिकित्सा की सुविधाओं को बढ़ावा दिया।शिलालेखों में उल्लेख है कि उन्होंने राजमार्गों के किनारे वृक्ष लगवाए, यात्रियों के लिए जल स्रोत बनवाए और चिकित्सा केंद्रों की स्थापना की, जहाँ पशु और मनुष्य दोनों की चिकित्सा की जाती थी। यह एक अत्यंत आधुनिक सोच थी, जो आज के पर्यावरणीय संकटों के समाधान में भी सहायक हो सकती है।

नैतिकता और व्यक्तिगत आचरण

सत्य, दान, और करुणा पर जोर, धम्म नीति का उद्देश्य केवल शासन के स्तर पर सुधार नहीं था, बल्कि यह व्यक्ति के आंतरिक आचरण और जीवन मूल्य को भी सुधारना चाहता था। अशोक ने सत्य बोलने, माता–पिता की सेवा, गुरुओं का सम्मान, दान देने, दयालुता, संयम और आत्मनिरीक्षण जैसे गुणों पर विशेष बल दिया।

उन्होंने नागरिकों से अपेक्षा की कि वे न केवल दूसरों के प्रति व्यवहार में शालीनता दिखाएँ, बल्कि आत्मविकास के मार्ग पर भी अग्रसर हों। नैतिकता को केवल बाह्य आचरण न मानकर, आंतरिक संवेदना के रूप में प्रस्तुत करना अशोक की नीति की विशेषता थी। अशोक की धम्म नीति एक युगांतरकारी सामाजिक–नैतिक दर्शन थी, जो आज भी अप्रासंगिक नहीं हुआ है। उसमें निहित सिद्धांत जैसे अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समानता, पर्यावरण संरक्षण और व्यक्तिगत नैतिकता, सभी आधुनिक विश्व की जटिल समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। अशोक ने जिस तरह से शासन और नैतिकता को जोड़ा, वह आज के लोकतांत्रिक और मानवाधिकार आधारित शासन प्रणालियों के लिए भी अनुकरणीय है।

धम्म नीति की समकालीन प्रासंगिकता का मूल्यांकन

सम्राट अशोक की धम्म नीति प्राचीन भारत की नैतिक और मानवीय चेतना का एक ऐसा स्वरूप प्रस्तुत करती है, जो न केवल अपने समय में समाज को दिशा देने में सक्षम रही, बल्कि आज के जटिल और विखंडित विश्व में भी अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होती है। 21वीं शताब्दी में जहाँ जातीय, धार्मिक, पर्यावरणीय और राजनीतिक संकट मानव सभ्यता को चुनौती दे रहे हैं, वहीं अशोक की धम्म नीति नैतिक पुनर्जागरण, सामाजिक समावेशिता और वैश्विक शांति की प्रेरणा प्रदान करती है। इस खंड में हम धम्म नीति की समकालीन प्रासंगिकता का विस्तृत विश्लेषण करेंगे।

सामाजिक समानता और धम्म

आधुनिक भारत में जाति और लिंग समानता की चुनौतियाँरू भारतीय समाज आज भी जातिवाद, भेदभाव, और लैंगिक असमानता जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। संविधानिक अधिकारों के बावजूद दलितों, आदिवासियों और महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, और सामाजिक प्रतिष्ठामें बराबरी नहीं मिल पाई है। सामाजिक विषमता और वंचना की यह स्थिति एक समावेशी लोकतंत्र की राह में बड़ी बाधा है।

धम्म नीति का सामाजिक समावेशिता पर प्रभाव

अशोक की धम्म नीति सामाजिक समरसता पर आधारित थी। उन्होंने अपने शिलालेखों में सभी वर्गों के प्रति समान व्यवहार, करुणा और सहिष्णुता की शिक्षा दी। उन्होंने दासों, महिलाओं, वृद्धों और गरीबों के कल्याण हेतु विशेष व्यवस्थाएँ कीं। आज जब हमें 'सबका साथ, सबका विकास' जैसे सिद्धांतों को व्यवहार में लाना है, तब अशोक की नीति सामाजिक न्याय का नैतिक आधार प्रदान कर सकती है। उनके विचार जाति या लिंग नहीं, बल्कि नैतिक आचरण को प्राथमिकता देते थे।

पर्यावरण संरक्षण

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में धम्म नीति आज दुनिया जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वन विनाश, जैव विविधता की क्षति जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रही है। विज्ञान समाधान देता है, परंतु व्यवहारिक परिवर्तन के लिए नैतिक प्रेरणा आवश्यक है।

अशोक के पशु कल्याण और वन संरक्षण के उपायों की प्रासंगिकता अशोक ने 2300 वर्ष पूर्व ही पर्यावरण और जीव संरक्षण की दिशा में पहल की थी। उन्होंने पशु वध पर नियंत्रण, पशु चिकित्सा केंद्रों की स्थापना, वृक्षारोपण, जल स्रोत निर्माण और वन संरक्षण की योजनाएँ आरंभ कीं। यह नीतियाँ आज के 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट' के विचार से मेल खाती हैं। पर्यावरण के प्रति करुणा और उत्तरदायित्व की भावना, जो अशोक ने प्रोत्साहित की, आज जलवायु नीतियों की आत्मा हो सकती है।

धार्मिक सहिष्णुता

वैश्विक धार्मिक संघर्ष और धम्म नीति का समाधान आज का वैश्विक परिदृश्य धार्मिक असहिष्णुता, आतंकवाद, और सांप्रदायिक तनाव से ग्रस्त है। धर्म के नाम पर हिंसा, ध्रुवीकरण और युद्ध की स्थितियाँ लगातार उत्पन्न हो रही हैं। अशोक की धम्म नीति इस दिशा में एक वैकल्पिक मार्ग सुझाती है।

भारत में बहु–सांस्कृतिक समाज के लिए धम्म का योगदानरू भारत जैसे बहुधार्मिक देश में जहाँ अनेक धर्म, भाषाएँ और संस्कृतियाँ सह–अस्तित्व में हैं, वहाँ धार्मिक सहिष्णुता और परस्पर सम्मान अत्यंत आवश्यक है। अशोक ने सभी मतों को आदर देने, उनकी आलोचना से बचने और संवाद को प्राथमिकता देने की बात की थी। उनका दृष्टिकोण समावेशी राष्ट्रवाद का समर्थन करता है और सांस्कृतिक एकता को मजबूती देता है।

शासन और नैतिकता

आधुनिक लोकतंत्र में धम्म नीति के सिद्धांतों का उपयोग आज की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में जनता की भागीदारी और शासन की जवाबदेही मूलभूत सिद्धांत हैं, लेकिन कई बार शासन नैतिकता से विमुख होकर केवल अधिकार और नियंत्रण का माध्यम बन जाता है। अशोक ने शासन को एक नैतिक जिम्मेदारी माना "राजा वह नहीं जो शक्ति से शासन करे, बल्कि वह जो प्रजा के कल्याण हेतु करुणा और धर्म से शासित हो।"

भ्रष्टाचार और अनैतिक शासन के खिलाफ धम्म का दृष्टिकोण धम्म नीति शासक और प्रजा, दोनों के नैतिक आचरण पर बल देती है। आज जब प्रशासनिक भ्रष्टाचार, अनैतिकता और शक्ति का दुरुपयोग व्यापक स्तर पर देखा जा रहा है, अशोक की नीति एक उदाहरण प्रस्तुत करती है कि शासन कैसे सेवा, आत्मनिरीक्षण और सत्य के सिद्धांतों पर आधारित हो सकता है।

वैश्विक शांति

अहिंसा और विश्व शांति के लिए धम्म नीति की प्रेरणा आज की दुनिया युद्ध, आतंक, आक्रामक राष्ट्रवाद और हथियारों की होड़ से जूझ रही है। अशोक की धम्म नीति अहिंसा पर आधारित थी, जो आज भी गांधीवाद और संयुक्त राष्ट्र की 'वर्ल्ड पीस' संकल्पनाओं में प्रतिध्वनित होती है। अशोक ने युद्ध को 'धम्म विजय' से प्रतिस्थापित किया यह एक क्रांतिकारी सोच थी, जो बल से नहीं बल्कि नैतिक श्रेष्ठता से हृदय जीतने की बात करती थी। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा, करुणा और सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने हेतु अशोक का दृष्टिकोण अत्यंत प्रेरणादायक हो सकता है। उनके विचारों को वैश्विक शांति शिक्षा, कूटनीति और शांति प्रयासों में शामिल किया जाना चाहिए। सम्राट अशोक की धम्म नीति, यद्यपि प्राचीन भारत की देन है, परंतु वह एक सार्वकालिक और सार्वभौमिक दर्शन प्रस्तुत करती है। सामाजिक समानता, पर्यावरण संरक्षण, धार्मिक सहिष्णुता, नैतिक शासन और वैश्विक शांति जैसे मुद्दों पर अशोक के सिद्धांत आज भी हमारे लिए पथप्रदर्शक बन सकते हैं। धम्म नीति हमें यह सिखाती है कि नैतिकता केवल निजी आचरण का विषय नहीं, बल्कि शासन, समाज और वैश्विक संबंधों की भी बुनियाद होनी चाहिए। अशोक का आदर्श यह दर्शाता है कि जब नेतृत्व नैतिक और करुणाशील हो, तभी सच्ची प्रगति और स्थायी शांति संभव होती है।

तुलनात्मक विश्लेषणः धम्म नीति और आधुनिक दर्शन

सम्राट अशोक की धम्म नीति न केवल मौर्यकालीन भारत में नैतिक शासन की नींव थी, बल्कि यह दर्शन आज भी अनेक आधुनिक विचारधाराओं और वैश्विक आदर्शों के साथ संवाद करता प्रतीत होता है। इस खंड में हम धम्म नीति की तुलना गांधीवादी अहिंसा, संयुक्त राष्ट्र के सतत् विकास लक्ष्यों (SDGs), अन्य प्राचीन शासकों की नीतियों, तथा उसकी कुछ ऐतिहासिक और समकालीन सीमाओं के संदर्भ में करेंगे।

धम्म नीति और गांधीवादी अहिंसा

महात्मा गांधी ने अहिंसा को अपने राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों की आत्मा बनाया, जो मूलतः अशोक की धम्म नीति से प्रेरित था। गांधी के लिए अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा का निषेध नहीं थी, बल्कि यह एक सक्रिय नैतिक शक्ति थी जो सत्य, सहिष्णुता और करुणा पर आधारित थी। अशोक और गांधी, दोनों ने सत्ता और नैतिकता को एकसाथ जोड़ने का प्रयास किया। दोनों ने यह विश्वास किया कि हिंसा से सामाजिक परिवर्तन नहीं आता, बल्कि नैतिक बल और आंतरिक आत्मबल के माध्यम से ही सच्चा और टिकाऊ सुधार संभव है। जहाँ अशोक ने कलिंग युद्ध के पश्चात आत्मानुशासन का मार्ग अपनाया, वहीं गांधी ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सत्याग्रह के माध्यम से जनजागरण किया। इस प्रकार गांधीवादी अहिंसा, धम्म नीति की आधुनिक व्याख्या है।

धम्म और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs)

संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित 17 सतत विकास लक्ष्य (SDGs) का उद्देश्य वैश्विक स्तर पर गरीबी हटाना, समानता बढ़ाना, और पर्यावरण की रक्षा करना है। ये लक्ष्य भी एक नैतिक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं, जो आर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक न्याय और पारिस्थितिक संतुलन को महत्व देता है।अशोक की धम्म नीति कई दृष्टियों से SDGs के समानांतर दिखाई देती हैः

- **सामाजिक कल्याण (SDG 1 और 10):** अशोक ने निर्धनों, वृद्धों और बीमारों की देखभाल की व्यवस्था की।
- **स्वास्थ्य और जीवन (SDG 3):** पशु और मानव चिकित्सा केंद्रों की स्थापना की।
- **शांति और न्याय (SDG 16):** दंड प्रणाली में करुणा और सुधार की भावना।
- **पर्यावरण संरक्षण (SDG 13, 15)** वृक्षारोपण, पशु संरक्षण, और जल स्रोतों का निर्माण।

इस प्रकार धम्म नीति एक नैतिक, टिकाऊ और समावेशी समाज की कल्पना करती है, जो SDGs की भावना से मेल खाती है।

अन्य प्राचीन शासकों की नीतियों से तुलना

रोमन सम्राटों की नीतिरोमन सम्राट ऑगस्टस और ट्रोजन जैसे शासकों ने विधि, प्रशासनिक सुधार और साम्राज्य विस्तार पर बल दिया, परंतु नैतिकता को राजनीतिक उद्देश्य से जोड़ने का प्रयास सीमित था। यद्यपि रोमन कानूनों ने सामाजिक अनुशासन को बढ़ावा दिया, परंतु उसमें करुणा और अहिंसा जैसी भावनाओं की प्रमुखता नहीं थी।

चीनी दर्शन जिसे कन्फ्यूशियस की नीति भी कहा जाता है, कन्फ्यूशियस के विचार 'ली' (Ritual propriety), 'रेन' (Humaneness), और 'झोंग' (Loyalty) जैसे सिद्धांतों पर आधारित थे। वह भी शासन में नैतिकता की आवश्यकता पर बल देते थे। अशोक और कन्फ्यूशियस दोनों का उद्देश्य नैतिक व्यक्ति के निर्माण के माध्यम से आदर्श समाज की स्थापना करना था। हालांकि कन्फ्यूशियस की प्रणाली अधिक अनुशासन–केन्द्रित थी, जबकि अशोक की नीति करुणा और आत्म परिवर्तन पर अधिक आधारित थी।

अशोक की धम्म नीति की सीमाएँ

अशोक के बाद मौर्य साम्राज्य तेजी से विघटित हो गया। इससे यह प्रश्न उठता है कि क्या धम्म नीति राज्य की राजनीतिक शक्ति और सुरक्षा के लिए पर्याप्त थी? इस पर दृष्टि डालते हुए कह सकते हैं कि इसकी निम्नलिखित सीमाएं हैं:

- **धार्मिक रूपांतरण का विवादः** यद्यपि अशोक ने सभी धर्मों का सम्मान किया, फिर भी कुछ विद्वान मानते हैं कि बौद्ध धर्म को विशेष संरक्षण मिलने से अन्य परंपराएँ उपेक्षित हो गईं।
- **आधुनिक राजनीति की जटिलताः** आज के बहुस्तरीय शासन और वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था में नैतिक सिद्धांतों को लागू करना कठिन है।
- **नैतिक नीति की अपर्याप्तताः** सामाजिक समस्याएँ केवल नैतिक उपदेशों से नहीं सुलझती बल्कि उन्हें संस्थागत ढांचे, विधिक समर्थन और व्यवहारिक उपायों की आवश्यकता होती है।

अतः कह सकते हैं कि धम्म नीति का तुलनात्मक विश्लेषण यह दर्शाता है कि सम्राट अशोक का दृष्टिकोण आज की वैश्विक चुनौतियों के उत्तर में एक नैतिक विकल्प प्रस्तुत करता है। यद्यपि उसके कुछ ऐतिहासिक और व्यवहारिक सीमाएँ हैं, परंतु उसके मूलभूत सिद्धांत अहिंसा, सहिष्णुता, सामाजिक न्याय, और पर्यावरणीय संतुलन आज भी प्रासंगिक हैं और आधुनिक दर्शन के साथ गहरे संवाद में हैं।

निष्कर्ष

सम्राट अशोक की धम्म नीति एक ऐसा नैतिक और सामाजिक दर्शन है, जिसकी जड़ें भले ही प्राचीन भारत में हों, पर इसकी शाखाएँ आज के वैश्विक संदर्भ में भी प्रासंगिक रूप से फैली हुई हैं। अहिंसा, सत्य, करुणा, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समानता, और पर्यावरण संरक्षण जैसे सिद्धांत आधुनिक समाज की जटिल समस्याओं के समाधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अशोक की धम्म नीति न केवल एक व्यक्तिगत आचरण का मार्गदर्शक है, बल्कि यह शासन, समाज और वैश्विक संबंधों के लिए भी एक नैतिक ढांचा प्रस्तुत करती है। आज के युग में जहाँ सामाजिक विषमता, धार्मिक असहिष्णुता, राजनीतिक भ्रष्टाचार और पर्यावरणीय संकट जैसे मुद्दे सामने हैं, वहाँ धम्म नीति इन सभी के लिए एक नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करती है। संयुक्त राष्ट्र के सतत् विकास लक्ष्यों, गांधीवादी विचारधारा, और वैश्विक शांति प्रयासों में धम्म के सिद्धांतों की छाया स्पष्ट दिखाई देती है।

हालांकि, आधुनिक समाज में धम्म नीति को लागू करना कई कारणों से चुनौतीपूर्ण है। समकालीन राजनीति में सत्ता और लाभ की प्राथमिकता, वैश्विक पूंजीवाद का दबाव, और संस्थागत भ्रष्टाचार, नैतिक मूल्यों की जगह व्यावसायिकता को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रों में किसी नैतिक नीति को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार कराना भी एक कठिन कार्य है। इसके बावजूद, धम्म नीति को पुनः प्रासंगिक बनाने की संभावनाएँ अनेक हैं जैसे कि शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का समावेश, जिससे बचपन से ही करुणा, सहिष्णुता और अहिंसा की

भावना विकसित हो। नीति निर्माण में सामाजिक कल्याण और पर्यावरणीय संतुलन को प्राथमिकता, जिससे शासन अधिक उत्तरदायी और संवेदनशील बन सके।

सामाजिक जागरूकता अभियान, जो नागरिकों को धम्म के सिद्धांतों से जोड़ें और उन्हें व्यवहार में लाने हेतु प्रेरित करें। अंततः, अशोक की धम्म नीति केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा भी है। यह एक ऐसा सार्वभौमिक दर्शन है, जो मानवता को नैतिकता, सह–अस्तित्व और शांति की ओर ले जा सकता है। आज की दुनिया को फिर से 'धम्म विजय' की आवश्यकता है एक ऐसी विजय जो करुणा, सत्य और न्याय पर आधारित हो।

संदर्भ सूची

1. थापर, रोमिला (1997) *अशोक और धम्म की अवधारणा,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
2. शास्त्री,,नीलकंठ के.ए. (1988) *प्राचीन भारत का इतिहास,* रंजन पब्लिकेशंस, दिल्ली।
3. गांधी, महात्मा (1938) *हिंद स्वराज,* नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद।
4. बाशम, ए.एल. (1954) *भारत की सांस्कृतिक विरासत,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
5. आलोक कुमार (2009) *सम्राट अशोकः एक पुनर्मूल्यांकन,* भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।
6. यूएनडीपी (2023) सतत् विकास लक्ष्य (SDGs) रिपोर्ट. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, नई दिल्ली।
7. चक्रवर्ती, उमाशंकर (2011) अशोकन धर्म और बौद्ध धर्म में अंतर, *इंडियन हिस्टॉरिकलरिव्यू,* खंड 38, अंक 2, पृ. 45–62।
8. थेरवाद बौद्ध साहित्य (धम्मपद, सूत्रपिटक) धम्म नीति के सैद्धांतिक आधार, भारतीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, नागपुर।
9. हैवेल, ई.बी. (1921) *इंडियन स्कल्पचर एंड आर्ट,* मेट्रोपोलिटन बुक्स, लंदन।
10. राजेन्द्र प्रसाद (1965) *भारतीय नैतिक दर्शन,* नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
11. फॉक, हैन्स (1992) *अशोकन इन स्क्रिप्शन्स एंड द स्टडी ऑफ धम्म,* क्लेरेंडन प्रेस, ऑक्सफोर्ड।
12. नेहरू, जवाहरलाल (1946) *भारत एक खोज,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
13. शर्मा, पीयूष (2020) *धम्म नीति और समकालीन भारत,* समकालीन विमर्श, बुक्स इंडिया पब्लिकेशन, जयपुर।
14. विश्व बैंक (2022) पर्यावरण और विकासः भारत की स्थिति रिपोर्ट।
15. संविधान सभा वाद–विवाद, खंड 1–12; नैतिकता और सामाजिक न्याय पर दृष्टिकोण।

****